माता राधा चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री राधे वृषभानुजा,
भक्तनि प्राणाधार।
वृन्दावनविपिन विहारिणी,
प्रणवों बारंबार॥

जैसो तैसो रावरौ,
कृष्ण प्रिया सुखधाम।
चरण शरण निज दीजिये,
सुन्दर सुखद ललाम॥

॥ चौपाई ॥

जय वृषभान कुँवरि श्री श्यामा,
कीरति नंदिनी शोभा धामा।

नित्य बिहारिनी श्याम अधारा,
अमित मोद मंगल दातारा।

रास विलासिनी रस विस्तारिनी,
सहचरि सुभग यूथमन भावनि।

नित्य किशोरी राधा गोरी,
श्याम प्राणधन अति जिय भोरी।

करुणा सागर हिय उमंगिनि,
ललितादिक सखियन की संगिनी।

दिनकर कन्या कूल बिहारिनी,
कृष्ण प्राण प्रिय हुलसावनि।

नित्य श्याम तुमरौ गुण गावें,
राधा राधा कहि हरषावें।

मुरली में नित नाम उचारे,
तुव कारण प्रिया वृषभानु दुलारी।

नवल किशोरी अति छवि धामा,
द्युति लघु लगै कोटि रति कामा।

गौरांगी शशि निंदक बढ़ना,
सुभग चपल अनियारे नयना।

जावक युग युग पंकज चरना,
नूपुर धुनि प्रीतम मन हरना।

संतत सहचरि सेवा करहीं,
महा मोद मंगल मन भरहीं।

रसिकन जीवन प्राण अधारा,
राधा नाम सकल सुख सारा।

अगम अगोचर नित्य स्वरूपा,
ध्यान धरत निशदिन ब्रज भूपा।

उपजेउ जासु अंश गुण खानी,
कोटिन उमा रमा ब्रह्मानी।

नित्यधाम गोलोक विहारिनी,
जन रक्षक दुख दोष नसावनि।

शिव अज मुनि सनकादिक नारद,
पार न पायें शेष अरु शारद।

राधा शुभ गुण रूप उजारी,
निरखि प्रसन्न होत बनवारी।

ब्रज जीवन धन राधा रानी,
महिमा अमित न जाय बखानी।

प्रीतम संग देई गलबाँही,
बिहरत नित्य वृन्दावन माँही।

राधा कृष्ण कृष्ण कहैं राधा,
एक रूप दोउ प्रीति अगाधा।

श्री राधा मोहन मन हरनी,
जन सुख दायक प्रफुलित बदनी।

कोटिक रूप धरें नंद नंदा,
दर्श करन हित गोकुल चंदा।

रास केलि करि तुम्हें रिझावें,
मान करौ जब अति दुख पावें।

प्रफुलित होत दर्श जब पावें,
विविध भाँति नित विनय सुनावें।

वृन्दारण्य बिहारिनी श्यामा,
नाम लेत पूरण सब कामा।

कोटिन यज्ञ तपस्या करहू,
विविध नेम व्रत हिय में धरहू।

तऊ न श्याम भक्तहिं अपनावें,
जब लगि राधा नाम न गावे।

वृन्दाविपिन स्वामिनी राधा,
लीला बपु तब अमित अगाधा।

स्वयं कृष्ण पावैं नहिं पारा,
और तुम्हैं को जानन हारा।

श्री राधा रस प्रीति अभेदा,
सारद गान करत नित वेदा।

राधा त्यागि कृष्ण को भेजिहैं,
ते सपनेहु जग जलधि न तरिहैं।

कीरति कुँवरि लाड़िली राधा,
सुमिरत सकल मिटहिं भव बाधा।

नाम अमंगल मूल नसावन,
त्रिविध ताप हर हरि मन भावन।

राधा नाम लेइ जो कोई,
सहजहि दामोदर बस होई।

राधा नाम परम सुखदाई,
भजतहिं कृपा करहिं यदुराई।

यशुमति नंदन पीछे फिरिहैं,
जो कोउ राधा नाम सुमिरिहैं।

राम विहारिन श्यामा प्यारी,
करहु कृपा बरसाने वारी।

वृंदावन है शरण तिहारौ,
जय जय जय वृषभानु दुलारी।

॥ दोहा ॥

श्री राधा सर्वेश्वरी,
रसिकेश्वर घनश्याम।
करहुँ निरंतर बास मैं,
श्री वृंदावन धाम॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल